ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–५७
दिनांक- शुक्रवार, २३ जुलाई, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.7 एवं 25.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 95 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 66 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.0 एवं दोपहर में 37.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 9.4 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(24–28 जुलाई, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 24–28 जुलाई, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रह सकते हैं। अगले दो से तीन दिनों तक उत्तर बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर हल्की–हल्की वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी होने का अनुमान है। इसके बाद अर्थात 25 जुलाई के बाद वर्षा की सक्रियता में वृद्धि होगी। 27–28 जुलाई को बेगुसराई, समस्तीपुर, वैशाली, सारण, सिवान, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, पूर्वी तथा पश्चमी चम्पारण जिलों में भारी वर्षा तथा मेघ गर्जन के साथ आकाशीय बिजली गिरने की सम्भावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 33–37 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 23–28 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार के साथ अगले एक दिन तक पूरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है।

• समसामयिक सुझाव

- विगत सप्ताह में उतर बिहार में हल्की से मध्यम बर्षा हुई है। मौसम पूर्वानुमान की अवधि में वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई, धान की रोपाई प्राथमिकता के आधार पर करें। कदवा के समय ३० किलोग्राम नेत्रजन, ६० किलोग्राम स्फुर एवं ३० किलोग्राम पोटाश के साथ २५ किलोगाम जिंक सल्फेट या १५ किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- धान की रोपनी में प्राथमिकता दें। किसान भाई ३० जुलाई से पहले रोपनी संपन्न कर लें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के २–३ दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (३ लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (१.५ लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (३ लीटर दवा प्रति हेक्टर) का ५००–६०० लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से०मी० पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
- खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में १५०–२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। प्याज के स्वस्थ पौध के लिए पौधशाला से नियमित रूप से खरपतवार को निकालते रहें।
- केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–१ अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी २.१ मीटर है एवं बौनी जातियों में १.५ मीटर रखें।
- उचाँस जमीन में अरहर की बुआई करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलो नेत्रजन, ४५ किलो स्फुर एवं २० किलो पोटाश तथा २० किलो सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा ९, नरेद्र अरहर १, मालवीय–१३, राजेन्द्र अरहर–१ आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी ६० से०मी० रखें । बीज दर १८ से २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
- मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–३, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०–२६७ अनुशंसित है। उन्नत किस्मों के लिए बीज दर १ से १.५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा २०० से ३०० ग्राम संकर किस्मों के लिए रखें। क्यारियों की चौड़ाई एक मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार ३–४ मीटर रखें। बीज को गिराने से पूर्व थायरम ७५ प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
- वर्षा ऋतु में उमस एवं जलजमाव के कारण बिमारियों जैसे गलघोटु, लंगड़ी बुखार, सर्रा बबेसियोसिस, पी०पी०आर०, दस्त, निमोनिया इत्यादि होने की संभावना बढ़ जाती है। इनसे बचने के लिए टिकाकरण करावें एवं पशुओं को दुषित पानी या बाढ़ के पानी में भिगें चारा या दाना नहीं दें। पशुओं के पैरों को पोटाशियम परमेंगनेट या फिटकीरी के घोल से धोएँ। दुधारु पशुओं को अत्यधिक चारा दाना नहीं दें अन्यथा दस्त होने की संभावना रहती है। गाभीन गाय–भैंसो को खनिज मिश्रण ५० ग्राम प्रतिदिन दें। सर्पदंश से वचने के लिए वाड़े (पशु गृह) में रोशनी की समुचित व्यवस्था करें।
- फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का यह समय अनुकुल चल रहा है। किसान भाई अपने पसंद के अनुसार आम, लीची, अमरूद, नींबू, पपीता एवं केला की रोपनी कर कर सकते हैं।
- कद्दुवर्गीय सब्जियों को उपर चढ़ाने की व्यवस्था करें ताकि वर्षा से सब्जियों की लत्तर को गलने से बचाया जा सकें। खड़ी फसलों अथवा नर्सरी में जमा हुए अधिक वर्षा जल के निकासी की व्यवस्था करें।

आज का अधिकतम तापमानः 34.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 27.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी